श्री वीतराग शासन जयवंत हो

विशद
सिद्धचक्र विधान लघु
(हिंदी+संस्कृत)

मध्य में ॐ
प्रथम – 4
द्वितीय – 8
तृतिय – 16
चतुर्थ – 32
पंचम – 48

108

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - विशद सिद्धचक्र विधान लघु (हिंदी+संस्कृत)

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - चतुर्थ-2026● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री विशालसागर महाराज, मुनि श्री विभोरसागर महाराज
मुनि श्री विलक्ष्यसागर महाराज,मुनि श्री विपिनसागर महाराज

सहयोग - आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती

संपादन - ब्र. आस्था दीदी (9660996425)

संयोजन - ब्र. प्रदीप भैया (7568840873)

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जी सेठी, पी-958, गली नं. 3,
शांति नगर, जयपुर मो. 9413336017

2. विशद साहित्य केन्द्र कुआँ वाला जैनपुरी
मो.: 09416882301

3. नीरज जैन लखनऊ 9451251308

4. जय अरिहन्त ट्रेडर्स, गाँधी नगर, दिल्ली मो. 9818115971

पुण्यार्जक परिवार-

1. सवाई सिंघई श्रीमति अर्चना जैन मनोज जैन
शौर्य जैन, अनामिका जैन नैनधरा वाले बंडा जिला सागर 7999928011

2. रवीन्द्र कुमार जैन, आयुष जैन, अनुज जैन तिगोडा वाले बरा चौराहा
बंडा बेलई जिला सागर 8889811812

3. श्री महेन्द्र भैया जी भूसा वाले बंडा जिला सागर

कृति - श्री सिद्धचक्र विधान लघु (हिंदी+संस्कृत)

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2025 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री विशालसागरजी महाराज,मुनि श्री विश्वाक्षरसागरजी महाराज,
मुनि श्री विभोरसागरजी महाराज,मुनि श्री विलक्ष्यसागरजी महाराज,
मुनि श्री 108 विपिनसागरजी महाराज

सहयोग - आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती

संपादन - ब्र. आस्था दीदी (9660996425)

संयोजन - ब्र. प्रदीप भैया 7568840873

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जी सेठी, पी-958, गली नं. 3,
शांति नगर, जयपुर मो. 9413336017

2. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301

3. नीरज जैन लखनऊ 9451251308

4. जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली
मो. 9818115971

पुण्यार्जक परिवार

व्रती श्रावक श्राविका श्रीमती गुलाब बाई,
श्री भागचंद जी जैन
तस्य पुत्र–पुत्री बा. ब्र. डॉ. सुधीर जैन
बा. ब्र. इंजी. सतीश जैन, बा. ब्र. डॉ. चंद्रकांता दीदी
बा. ब्र. डॉ. कु. रविकांता दीदी
ग्राम नरयावली (सागर)
हाल–अंकुर कॉलोनी, सागर (म.प्र.)

कृतिकार का कथन

यत्रा-मग्रहणा-दपीह जगती,पृष्ठे फणी भारयो-
भीमा वारिचरा मृगेश शरभाः, सौख्याय यान्ति क्षणात्।
प्राप्यन्ते स्मरणेन दिव्य विषयाश्-चार्घं हितस्मैददै,
वश्यासिद्ध गुणाय सिद्धि रमणी, यद् ध्यानतो जायते।।

जिनके नाम मात्र का स्मरण व आदर करने से सर्प, सिंह, गजादि तथा भयंकर व्याघ्र, अष्टापदादि, जलचरादि प्राणी क्षणभर में सुख शांति के निमित्त बन जाते हैं, जिनका चिंतवन करने से दिव्य विषयों की प्राप्ति हुआ करती है, एवं जिनका ध्यान करने से सिद्धि रूपी रमणी वशीभूत हो जाया करती है, उन सिद्ध परमेष्ठियों को मैं महार्घ अर्पण कर नमस्कार करता हूँ।

अनंत सिद्धों की आराधना हमेशा से भव्य जीवों के द्वारा की जाती रही है। जिसका साक्षात् उदाहरण है श्री शुभचंद्राचार्य रचित/संकलित संस्कृत सिद्धचक्र विधान इसी के आधार से वर्तमान में पंडित श्री संतलाल जी द्वारा रचित सिद्धचक्र विधान अत्याधिक प्रचलन में आया एवं अन्य रचनाकारों ने भी अनेक सिद्धचक्र विधानों की रचना की उनमें हमारे द्वारा रचित भी श्री सिद्धचक्र विधान है।

2021 कंपिल प्रवास के अवसर पर पंडित पारस जी मवाना के द्वारा निवेदन आया सप्तम एवं अष्टम वलय में अधिक समय लगता है कुछ संक्षेपीकरण हो जाए तो। यह सुनकर हमने लघु सिद्धचक्र विधान की रचना की। जिसमें 4,8,16,32,64,128,256,256 अर्घ्य पूजा सहित दिए गये। पश्चात् ब्र. तरुण भैया जी विधान करके अत्यंत प्रभावित हुए। उनने कहा हम 108 दिन का लघु सिद्धचक्र विधान कराना चाहते हैं वह भी आपके द्वारा रचित हो तो लघु सिद्धचक्र विधान की रचना हिंदी+संस्कृत में की है जो सभी भव्य जीवों के लिए रुचिकर हो। भव्य जीव विधान पाठ करके पुण्यार्जन कर जीवन मंगलमय बनाएँ पुस्तक का कार्य ब्र.आस्था दीदी के द्वारा किया गया है एवं जिसका प्रत्यक्ष परोक्ष सहयोग प्राप्त है एवं सभी आशीर्वाद के पात्र हैं।

आचार्य विशदसागर

कानपुर 8/1/2024 दिन सोमवार

आस्था का उत्कर्ष

बिन मांगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।

इस युक्ति को चरितार्थ करते हुए परम पूज्य आचार्य श्री विशदसागर जी मुनिराज ने अपनी ज्ञान प्रज्ञा से गागर में सागर भर दिया है। ज्ञान का अथाह सागर जिनके अंतरंग से स्फुरित होता है जो स्वयं के ही नहीं जन-जन के मार्गदर्शी हैं। जिस प्रकार से आकाश में ध्रुव तारा का अस्तित्व अलग ही है उसी प्रकार साहित्य क्षेत्र में आपका अग्रणीय स्थान है। लघु से लेकर बृहद् विधानों की रचना करके आपने युवा वर्ग को मार्गदर्शन दिया है जिनके पास समयाभाव है वह लघु विधानों के माध्यम से जिनेन्द्र भगवान की पूजा, अर्चना करके असीम पुण्य का संचय कर सकते हैं।

ये जिनेन्द्रं ना पश्यन्ति, पूजयन्ति स्तुवन्ति न।
निष्फलं जीवतं तेषां, धिकश्च गृहाश्रमम्।।

जो वीतरागी जिनेन्द्र प्रभु के दर्शन नहीं करते, ना ही पूजन करते हैं, ना स्तवन करते हैं, उनका गृहस्थाश्रम व्यर्थ है। इस बात को लक्ष्य बनाते हुए कम समय में ही श्रावक जन अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकें। ऐसी अनेक विधानों की रचना की इसी क्रम में कुछ संस्कृत के तीर्थंकर विधानों की रचना की उसी क्रम में बृहद् सिद्धचक्र विधान है लेकिन समयाभाव के कारण लोगों के निवेदन पर पुनः लघु सिद्धचक्र विधान और संस्कृत का लघु सिद्धचक्र विधान तैयार किया है जहाँ आप सिद्धों की आराधना आठ दिन में करते थे अब एक दिन में ही करना आसान हो गया है। साहित्य क्षेत्र में लखनऊ अहियागंज समाज ने वर्तमान के अकलंक आचार्य की उपाधि से अलंकृत किया। जैसे हिंदी के विधान सरल भाषा शैली में हैं वैसे ही संस्कृत भाषा सरल सुगम है जो आसानी से समझ में आ सकती है। अतः आप सभी से निवेदन है अधिक से अधिक इस रचना का लाभ लेकर स्व कल्याण करने के साथ-साथ पर कल्याण के भाव बनाएँ। गुरुदेव स्वस्थ हों, चिरायु हों, दीघार्यु हों, भव-भव में जब तक निर्वाण की प्राप्ति न हो तब तक आपके चरण सान्निध्य में रहकर निर्वाण को प्राप्त कर सकें यही मेरी भावना है। पुनः त्रय बार नमोस्तु....

ब्र. आस्था दीदी संघस्थ
जनरलगंज कानपुर

लघु विनय पाठ

दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह ,पढें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव जी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनंत चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीडाहारी लोक में,भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के,शिव पद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भव सिंधु में, एक आप आधार।
कर्म बंध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना ,से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिंब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं,अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाऽशुद्ध अवस्था में कोई ,णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाये।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि) (यदि अवकाश हो तो यहाँ पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले ,पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग,करणानुयोग,चरणानुयोग,द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र दशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी ,अनंत चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन , का करने वाले कल्याण।।
तीनलोक के ज्ञाता दृष्टा ,जग मंगल कारी भगवान।
भावशुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक ,श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!।
हे अर्हंत! अष्ट द्रव्यों का ,पाया मैंने आलंबन।
होकर के एकाग्र चित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ–प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन,सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शान्ती जिन,कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके ,हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान्।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निष्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व–पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौ भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान्।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मनबल वचन कायबल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धी के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

(इति परम–ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

लघु मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना दोहा

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमाकृत्रिम बिंब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलहकारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह विराजित सर्व तीर्थंकर,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्रनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थ क्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड गणधरादि मुनि, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सखी छंद

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ सहित सर्व पूज्येषु श्री जिनेन्द्राय नमः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों मय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री........ अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सिम करो, कर दो यह उपकार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **जैनधर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।**
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

ज्ञानोदय छंद

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यंतर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान्।।3।।
मध्यलोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि पे, नंदीश्वर हैं मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुंडल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान्।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा

सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहे हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..........सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत,पंच विदेह स्थित सर्व जिनेश्वर,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्रनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थक्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाईद्वीप स्थित तीन कम नौ करो**ड़** गणधरादि मुनीश्वरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सिद्ध भक्ति

असरीरा जीव घणा, उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायार मणायारा–लक्खण–मेयं तु–सिद्धाणं।।1।।
मूलोत्तर पयडीणं बंधोदय, सत्त कम्म उम्मुक्का।
मंगल भूदा सिद्धा–अट्ठ गुणा–तीद संसारा।।2।।
अट्ठविह कम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठगुणा किदकिच्चा, लोयग्ग णिवासिणो सिद्धा।।3।।
सिद्धा णट्ठट्ठमला, विसुद्ध बुद्धी य लद्धि सब्भावा।
तिहुगण सिरि सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे।।4।।
गमणा–गमण विमुक्के, विहडिय कम्मपयडि संघारा।
सासय सुह संपत्ते–ते, सिद्धा–वंदिमो णिच्चं।।5।।
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाण–दंसणमयाणं।
तइलोइ सेहराणं, णमो–सव्व–सिद्धाणं।।6।।
सम्मत्त्त णाण दंसण, वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु–लघु मव्वावाहं–अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।7।।
तव सिद्धे णय सिद्धे, संजम सिद्धे चरित्त सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि।।8।।

इच्छामि भंते! सिद्ध भत्ति काउसग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण, सम्मदंसण, सम्मचरित जुत्ताणं, अट्ठविह–कम्म–विप्पमुक्काणं,अट्ठगुण संपण्णाणं, उड्ढलोय मत्थयम्मि पयट्ठियाणं तव सिद्धाणं,णय सिद्धाणं ,चरित्त सिद्धाणं, अतीताणागद वट्टमाण कालत्तय सिद्धाण सव्वसिद्धाणं, सया णिच्चकालं, अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ,बोहिलाओ,सुगइगमणं,समाहिमरणं,जिण सम्पत्ति होऊ मज्झं।

श्री सिद्ध स्तवन

सोरठा– परम सिद्ध भगवान, मंगलमय मंगल परम।
करते हम गुणगान, मुक्त हुए जिन सिद्ध का।।

ज्ञानोदय छंद

जीवादिक तत्त्वों का जिसने, समीचीन श्रद्धान किया।
सम्यक् ज्ञान आचरण पाकर, निज आतम का ध्यान किया।।
संवर और निर्जरा करके, अष्ट कर्म का नाश किया।
अनन्त चतुष्टय को पाकर के, केवलज्ञान प्रकाश किया।।1।।
करके योग निरोध आपने, कर्मों का कीन्हा संहार।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, आतम का कीन्हा उद्धार।।
किए कर्म का नाश जहाँ वह, बना तीर्थ अतिशय पावन।
कहलाए निर्वाण क्षेत्र वह, सर्व लोक में मन भावन।।2।।
संत साधना से तीर्थों का, कण-कण पावन हुआ अहा।
पार हुआ भव सागर से वह, अतः क्षेत्र वह तीर्थ कहा।।
तीर्थ क्षेत्र की रज को प्राणी, अपने शीश चढ़ाते हैं।
श्रद्धा सहित वन्दना करके, अनुपम जो फल पाते हैं।।3।।
तीर्थ क्षेत्र का वन्दन करके, तीर्थ रूप हम हो जावें।
कर्माश्रव हो नाश हमारा, भव वन में न भटकावें।।
संत और भगवन्तों के हम, पथगामी बन जाएँ अहा।
उनके गुण पा जाएँ हम भी, अन्तिम यह उद्देश्य रहा।।4।।
संत साधना करके अपने, करते हैं कर्मों का नाश।
रत्नत्रय के द्वारा करते, निज आतम का पूर्ण विकाश।।
मोक्ष महाफल विशद प्राप्त कर, बन जाते हैं अनुपम सिद्ध।
शाश्वत सुख पाने वाले वे, हो जाते हैं जगत प्रसिद्ध।।5।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

सिद्ध भक्ति सिद्ध यंत्रोद्वार (सिद्ध यंत्र पूजा)

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मा स्वरावेष्टितं।
वर्गापूरित-दिग्गताम्बुज-दलं तत्संधि-तत्त्वान्वितम्।।
अंतः पत्र तटेष्वनाहत-युतं ह्रीकार-सवेष्टितं।
देव ध्यायति यः स मुक्ति सुभगो वैरीय कंठी रवः।।1।।

बिन्दु समन्वित ऊर्ध्व अधो 'र' ,वर्ण हकार है स्वर संयुक्त।
वर्गापूरित दिग् अम्बुज दल, सन्धि है तत्त्वों से युक्त।।
यंत्र ह्रीं से क्रों सुपद तक, वेष्ठित यंत्र सिद्ध गुणवान।
ध्याते मुनिवर कर्म शत्रु को, सिंह नाग को गरुड़ समान।।

(इति सिद्धचक्र यंत्रस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ स्थापना (शम्भू छंद)

कर्मों का सम्बन्ध नाशकर, सिद्ध प्रभू होते अशरीर।
रोग उपद्रव व्याधी विरहित, नाशे जन्म-जरा की पीर।।
सौख्य अनन्त में लीन रहें नित, करते हैं ज्ञानामृत पान।
सिद्धों का आह्वानन् है ज्यों, कर्माग्नि को मेघ समान।।

दोहा- आह्वानन् करते यहाँ, हे त्रिभुवन के ईश!।
विशद भाव से पूजने, झुका रहे पद शीश।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपते ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द रेखता)

कलश में नीर भर लाए, नशाने रोग त्रय आये।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित गंध हम लाए, भवातप नाश को आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल तन्दुल धुवा लाए, सुपद अक्षय को हम आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन सुरभित विशद लाए, काम के नाश को आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु यह मिष्ठ बनवाए, क्षुधा के नाश को लाए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।5।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाकर दीप यह लाए, मोहतम नाश को आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।6।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दश गंध युत लाए, कर्म के नाश को आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।7।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल थाल भर लाए, मोक्ष फल हेतु हम आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य यह श्रेष्ठ बनवाए, सुपद शाश्वत को हम आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्धचक्र पूजन *स्थापना*

हे सिद्ध सनातन अविनाशी! हे ज्ञान शरीरी शुद्ध स्वरूप!।
हे ज्ञाता दृष्टा अविकारी! हे अक्षय निधि चैतन्य रूप!।
हे नित्य निरंजन अविकारी, हे गुणानंत धारी ललाम।
हे शाश्वत तीर्थ विशद पावन!, तव चरणों में शत्–शत् प्रणाम।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठी समूह! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

रिश्ते नातों की ज्वाला से, काल अनादी झुलस रहे।
राग होय जिन के प्रति मन में, उनको अपना जीव कहे।।
शाश्वत सिद्ध रहे अविनाशी, जल से पूज रचाएँगे।
सिद्धों का आराधन करके, सिद्ध सुपद को पाएँगे।।1।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धपरमेष्ठीने जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पर में दुनिया खोई रहती, निज का ध्यान नहीं आए।
जो हैं अपने परम हितैषी, वे न हमको मन भाए।।
शाश्वत सिद्ध रहे अविनाशी, गंध से पूज रचाएँगे।
सिद्धों का आराधन करके, सिद्ध सुपद को पाएँगे।।2।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धपरमेष्ठीने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को सुमन बनाने हेतू, अंतस् को उज्ज्वल करते।
ब्रह्म बाग पुष्पित करते जो, काम रोग अपना हरते।।
शाश्वत सिद्ध रहे अविनाशी, पुंज से पूज रचाएँगे।
सिद्धों का आराधन करके, सिद्ध सुपद को पाएँगे।।3।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धपरमेष्ठीने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भोगे भोग सभी इस जग के, किंतू तृप्ति नहीं पाई।
आतम रस को पाने की सुधि, प्रभु दर्शन करके आई।।
शाश्वत सिद्ध रहे अविनाशी, पुष्प से पूज रचाएँगे।
सिद्धों का आराधन करके, सिद्ध सुपद को पाएँगे।।4।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धपरमेष्ठीने कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके हृदय अटल श्रद्धा हो, तो सद्ज्ञान के दीप जलें।
दीपक लेकर सूर्य चंद भी, अर्चा करने आप चलें।।
शाश्वत सिद्ध रहे अविनाशी, चरु से पूज रचाएँगे।
सिद्धों का आराधन करके, सिद्ध सुपद को पाएँगे।।5।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धपरमेष्ठीने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खेल निराले हैं कर्मों के, चारों गति में भटकाएँ।
पड़े फंद में उनके जो, भी क्षुधा से वे न बच पाएँ।।
शाश्वत सिद्ध रहे अविनाशी, दीप से पूज रचाएँगे।
सिद्धों का आराधन करके, सिद्ध सुपद को पाएँगे।।6।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धपरमेष्ठीने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग अग्नि में धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे।
हैं फल फूल विषैले जग के, गजब कभी संयोग रहे।।
शाश्वत सिद्ध रहे अविनाशी, धूप से पूज रचाएँगे।
सिद्धों का आराधन करके, सिद्ध सुपद को पाएँगे।।7।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धपरमेष्ठीने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महामोक्ष फल पाने को फल, सरस थाल भर के लाए।
भोग करें जिन सिद्ध श्रेष्ठ फल, वह पाने को आए।।
शाश्वत सिद्ध रहे अविनाशी, फल से पूज रचाएँगे।
सिद्धों का आराधन करके, सिद्ध सुपद को पाएँगे।।8।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धपरमेष्ठीने मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म पर विजय प्राप्ति को, अष्ट द्रव्य ये लाए हैं।
अर्घ्य बनाकर विशद भाव से, अर्चा करने आए हैं।।
शाश्वत सिद्ध रहे अविनाशी, अर्घ्य से पूज रचाएँगे।
सिद्धों का आराधन करके, सिद्ध सुपद को पाएँगे।।9।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धपरमेष्ठीने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलयः

दोहा- सिद्धों के हैं आठ गुण अनुपम महिमावान।
पुष्पांजलि कर पूजते, करते हैं, गुणगान।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अष्ट गुण सहित सिद्धों के अर्घ

ज्ञानोदय छंद

जो दर्शन गुण का घात करे, वह दर्शन आवरणी जानो।
यह कर्म महा दुःखदायी है, इसको भी तुम कम न मानो।।
यह कर्म नाश कर सिद्ध प्रभु, शुभ दर्शानन्त जगाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।1 ।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुणयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञान सुगुण को ढक लेता, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
इस कारण जीव अनादि से, भव सागर में ही भटक रहा।।
कर ज्ञानावरणी कर्म शमन, प्रभु ज्ञान अनन्त जगाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।2 ।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुणयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-दुख के वेदन का कारण, यह कर्म वेदनीय होता है।
सुख में तो हँसता है लेकिन, दुख आने पर नर रोता है।।
प्रभु कर्म वेदनीय नाश किए, गुण अव्याबाध उपाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।3 ।।

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुणयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मोह महा बलशाली है, इसने दो रूप बनाए हैं।
दर्शन चरित्र दोनों गुण में, यह अपनी रोक लगाए है।।
प्रभू मोह कर्म का नाश किए, सम्यक्त्व सुगुण प्रगटाए है।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।4 ।।

ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्त्व गुणयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

है बन्धन आयू कर्म महा, चारों गतियों में कैद करे।
वह उठा पटक करता रहता, प्राणी की शक्ती पूर्ण हरे।।
प्रभु आयू कर्म विनाश किए, गुण अवगाहन शुभ पाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।5 ।।

ॐ ह्रीं अवगाहन गुणयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है शिल्पकार सम नाम कर्म, जो नाना रूप बनाता है।
ज्यों खेल खिलौना पाने को, बालक का मन ललचाता है।।
कर नाम कर्म का नाश प्रभु, सूक्ष्मत्व सुगुण उपजाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अनन्तसूक्ष्मत्व गुणयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ऊँच-नीच का कारण है, जग में कटुता का काम करे।
जो अरति ईर्ष्या का कारण, जीवों को कष्ट प्रदान करे।।
कर गोत्र कर्म का नाश प्रभू, गुण अगुरुलघु जिन पाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघु गुणयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कदम-कदम पर विघ्न करे, वह अन्तराय दुखदाई है।
शान्ती को क्षीण करे प्रतिपल, यह कर्म की ही प्रभुताई है।।
प्रभु अन्तराय का नाश किए, फिर वीर्यानन्त जगाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अतुलवीर्य गुणयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अष्ट कर्म को नाश करें, वे अष्ट सुगुण प्रगटाते हैं।
वे संसार वास को तजकर, सिद्ध सदन को पाते हैं।।
प्रभु अष्ट कर्म का नाश किए, फिर मोक्षमार्ग अनपाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं अष्ट गुणयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- शुद्ध सिद्ध चैतन्य मय, तीनों लोक प्रसिद्ध।
पुष्पांजलि कर पूजते, तीन लोक के सिद्ध।।

द्वितिय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

(तर्ज- बारह भावना) (विष्णुपद छन्द)

सम्यक् दर्शन की महिमा को, जिनवर ने गाया।
क्षायिक सम्यक् दर्शन भाई, सिद्धों ने पाया।।

सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान को पाया प्रभु ने, विशद ज्ञान पाए।
लोकालोक प्रकाशित करके, शिव मग दर्शाए।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च महाव्रत धारण करके, चारित प्रगटाए।
उत्तम संयम धारी प्रभु जी, निजानन्द पाए।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मादिक उत्पाद और व्यय, के हैं प्रभु नाशी।
निज अस्तित्व प्राप्त कीन्हें हैं, अक्षय गुण राशी।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।4।।

ॐ ह्रीं अस्तित्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज की निज में निजता पाने, वाले हितकारी।
प्रभु वस्तुत्व धर्म को पाए, जग मंगलकारी।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।5।।

ॐ ह्रीं वस्तुत्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व चराचर के ज्ञाता प्रभु, अप्रमेय धारी।
लोकालोक प्रमेय बताया, महिमा शुभकारी।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।6।।

ॐ ह्रीं अप्रमेयत्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् गुण पतित हानि वृद्धी जो, निज गुण में करते।
अगुरु-लघुत्व धर्म के धारी, निज में आचरते।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित् स्वरूप चेतन गुण पाए, अनुपम अविकारी।
महिमा कह पाना है मुश्किल, जिनकी मनहारी।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।8।।

ॐ ह्रीं चेतनत्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग रंग न गंध है कोई, रस भी न होते।
हैं अमूर्त जिन सिद्ध निराले, पर गुण को खोते।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।9।।

ॐ ह्रीं अमूर्तत्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप के श्रद्धाधारी, समकित गुण पावें।
भेद ज्ञान के द्वारा प्राणी, निज गुण प्रगटावें।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।10।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान धर्म चेतन का भाई, आगम में गाया।
कर्म नाशकर ज्ञानावरणी, मोक्ष सुपद पाया।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।11।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव धर्म चिन्मूरत धारी, इस जग में गाया।
नहीं जीव सम अन्य द्रव्य कोइ, पावन बतलाया।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।12।।

ॐ ह्रीं जीवत्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं किसी से रोके रुकता, सूक्ष्म धर्म धारी।
जीव अमूर्त कहा आगम में, पावन अविकारी।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।13।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व संवेदन ज्ञान का अनुभव, जीव करे भाई।
निजानन्द अमृत रस पीवे, अनुपम सुखदायी।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।14।।

ॐ ह्रीं स्वसंवेदनज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छन्द)

स्वरूप ताप तप से, सब कर्म नशाए।
आतम उद्योत पाने, निज ज्ञान जगाए।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।15।।

ॐ ह्रीं स्वरूपतापतपसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दर्श ज्ञान वीर्य, सुखानन्त जगाए।
जो कर्म घातिया हैं, वे आप नशाए।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।16।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयात्मकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध प्रभू की अर्चा करते, सोलह गुण के साथ महान।
तीन योग से गुण गाते हैं, परम सिद्ध का महिमावान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, महिमा गाते अपरंपार।
तीन योग से वंदन करते ,प्रभु के चरणों बारंबार।।

ॐ ह्रीं षोडश गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- परम सिद्ध परमात्मा, जो बत्तिस गुणवान।
पूजें पुष्पांजलि सहित, पाने शिव सोपान।।

तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोधक छन्द)

प्रभु आनन्द धर्म कहलाए, जगत पूज्यता अतिशय पाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।1।।

ॐ ह्रीं आनन्दधर्मात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानन्द धर्म के धारी, सर्व जगत में मंगलकारी।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।2।।

ॐ ह्रीं परमानन्दधर्मात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्य स्वभाव धारने वाले, हर्ष विषाद रहित जिन आले।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।3।।

ॐ ह्रीं साम्यस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्य स्वरूपी आप कहाए, अनुपम समता भाव जगाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।4।।

ॐ ह्रीं साम्यस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त के धारी जानो, महिमा शाली अतिशय मानो।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त स्वरूपी गाए, भेद गुणी गुरु सहित कहाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।6।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त धर्म के धारी जानो, भेदाभेद स्वरूपी मानो।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।7।।

ॐ ह्रीं अनन्तधर्मात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त धर्म स्वरूपी गाए, धर्म सभी जिन रूप बनाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।8।।

ॐ ह्रीं अनन्तधर्मस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम स्वभाव धारी कहलाए, निज स्वभाव में लीन कहाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।9।।

ॐ ह्रीं समस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं संतुष्ट स्वयं के ज्ञाता, भवि जीवों के आनन्द दाता।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।10।।

ॐ ह्रीं संतुष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम सन्तोष धारने वाले, निज गुण के हैं जो रखवाले।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।11।।

ॐ ह्रीं समसंतोषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध निरंजन समगुण धारी, कर्म कलंक रहित अविकारी।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।12।।

ॐ ह्रीं साम्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निराबाध हैं सम स्थाई, फैली है जग में प्रभुताई।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।13।।

ॐ ह्रीं साम्यस्थायिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्याकृत्य साम्य गुणधारी, अचल रूप तिष्ठें मनहारी।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।14।।

ॐ ह्रीं साम्यकृत्याकृत्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य शरण से रहित कहाए, जिनकी शरण सभी जन पाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।15।।

ॐ ह्रीं अनन्यशरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अनन्य गुण के हैं धारी, गुण हैं जिनके विस्मयकारी।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।16।।

ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनन्य प्रमाण कहलाए, धर्म स्वयं निज का प्रगटाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।17।।

ॐ ह्रीं अनन्यधर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो परिणाम विमुक्त कहाए, जिनकी महिमा यह जग गाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी।।18।।

ॐ ह्रीं परिणामविमुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंगप्रयात)

प्रभु ब्रह्म स्वरूप निर्द्वन्द गाये, विशद ज्ञान ज्योती अकलंक पाए।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते।।19।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ब्रह्म गुणधारी जग में कहाए, सुनकर के महिमा हम भक्ती को आए।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते।।20।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ब्रह्म चेतन कहाते हैं स्वामी, करे भक्ति तो क्यों न हो मोक्षगामी।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते।।21।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचेतनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं शुद्ध पारणामिक भाव पाए, अतः आप सिद्धों में स्वयं जा समाये।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते।।22।।

ॐ ह्रीं शुद्धपारिणामिकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

स्वयं शुद्ध स्वभाव जिनने उपाया, अतः सिद्धपद आपने स्वयं पाया।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते।।23।।

ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुद्धि रहित हैं जिन सिद्ध स्वामी, बताए प्रभु सिद्ध स्वरूप नामी।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते।।24।।

ॐ ह्रीं अशुद्धिरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहित शुद्धाशुद्ध आप स्वयं ही कहाए, अनुभव स्वयं से स्वयं में ही पाए।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते।।25।।

ॐ ह्रीं शुद्ध्यशुद्ध कर्मरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी अनन्त दृग स्वरूपी कहाए, करम आप दर्शनावरणी नशाए।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते।।26।।

ॐ ह्रीं अनन्तदृकस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

दृगानन्द स्वभाव अनन्ता, पाए हो तुम हे भगवन्ता!।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।27।।

ॐ ह्रीं अनन्तदृगानन्दस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त दृगुत्पादक हे स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।28।।

ॐ ह्रीं अनन्तदृगुत्पादकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अनन्त ध्रुवयी कहलाते, ज्ञानादर्श स्वयं ध्रुव पाते।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।29।।

ॐ ह्रीं अनन्तध्रुवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्यय भाव आपने पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।30।।

ॐ ह्रीं अव्ययभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निलयानन्त कहाए स्वामी, शिवपथ गामी अन्तर्यामी।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।31।।

ॐ ह्रीं अनन्तनिलयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अनन्ताकार कहाए, निराकार फिर भी कहलाए।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।32।।

ॐ ह्रीं अनन्ताकाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस गुणधारी जिन स्वामी, पूज्य हुए जिन अंतर्यामी।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशद गुण युक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा– अड़तालिस गुण युक्त हम, पूजें श्री जिनराज।
पुष्पांजलि करते चरण, पाने सिद्ध समाज।।

चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चाल छंद

जिन सिद्धाचल पद पाए, शिवपुर में जो धाम बनाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं अचलपद सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जल में सिद्धी पाए, जल सिद्ध श्रेष्ठ कहलाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं जलसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन नगर गुफादि वाले, हैं स्थल सिद्ध निराले।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं स्थलसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में जो सिद्धि पाए, वह गगन सिद्ध कहलाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं गगनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर समुद्घात शिव पाए, वह सिद्ध स्वयंभू गाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं समुद्घातसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन समुद्घात शिव पाए, निज के गुण सिद्ध जगाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं असमुद्घातसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अतिशय रहित कहाए, साधारण सिद्ध कहाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं साधारणसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण विशेष प्रगटाए, असाधारण सिद्ध कहाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं असाधारणसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कल्याणक शुभ पाए, तीर्थंकर सिद्ध कहाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ी छन्द)

जिन तीर्थंकर के अन्तराल, में सिद्ध हुए ज्ञानी त्रिकाल।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।10।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरेतरसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्टावगाहन प्राप्त सिद्ध, जो पूज्य रहे जग में प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।11।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टअवगाहनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यम अवगाहन प्राप्त सिद्ध, निष्कर्म रहे जग में प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।12।।

ॐ ह्रीं मध्यमअवगाहनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं जघन्यावगाहन प्राप्त सिद्ध, अविकारी अनुपम जग प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।13।।

ॐ ह्रीं जघन्यअवगाहनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन त्रिजग लोकवर्ति प्रसिद्ध, सुर नर से पूजित कहे सिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।14।।

ॐ ह्रीं त्रिजगलोकसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षड् विध परिणत जिन काल सिद्ध, जो अष्ट गुणों से हैं प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।15।।

ॐ ह्रीं षट्विधिकालसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्ग सिद्ध जानो विशेष, जो सिद्ध हुए बनके जिनेश।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।16।।

ॐ ह्रीं उपसर्गसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर निरुपसर्ग जानो महान, हैं सिद्ध प्रभु जग में प्रधान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।17।।

ॐ ह्रीं निरूपसर्गसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर्द्वीपों से हुए सिद्ध, आगम का वर्णन है प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।18।।

ॐ ह्रीं द्वीपसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं उदधि सिद्ध जग में प्रधान, उनकी महिमा भी है महान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।19।।

ॐ ह्रीं उदधिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्थित आसन को सिद्ध धार, जग पूज्य हुए हैं निराकार।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।20।।

ॐ ह्रीं स्वस्थित्यासनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पर्यंकासन हुए सिद्ध, उनकी महिमा जग में प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।21।।

ॐ ह्रीं पर्यंकासनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सिद्ध पुरुष वेदी महान, जो सुख-शांति के हैं निधान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।22।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेदसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री वेदी जिनवर महान्, जिनका जग करता गुणोगान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।23।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सिद्ध क्लीव वेदी महान्, हम करें सिद्ध का नित्य गान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।24।।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध क्षपक श्रेणी प्रधान, पाके पाए सिद्धी महान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।25।।

ॐ ह्रीं क्षायिकश्रेणीसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो एक समय में हुए सिद्ध, न कर्म उन्हें कर सके विद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।26।।

ॐ ह्रीं एकसमयसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं त्रिकाल जग में प्रसिद्ध, वह तीन लोक में पूज्य सिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।27।।

ॐ ह्रीं त्रिकालसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक सिद्ध जग में महान, उनकी हम पूजा करें आन।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।28।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध कहे मंगल प्रधान, जिनकी महिमा अतिशय महान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।29।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध रहे मंगल स्वरूप, पद वन्दन करते सतत् भूप।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल।।30।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

सिद्ध सुमंगल ज्ञान के, धारी जिन भगवान।
जिन पद की पूजा करूँ, शुभ भावों से आन।।31।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलज्ञानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल दर्शन सिद्ध जिन, पाए मंगल रूप।
जिन पूजा कर मैं यहाँ, पाऊँ जिन स्वरूप।।32।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलदर्शनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल सम्यकता लहें, सिद्धश्री के नाथ।
जिन गुण पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।33।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलसम्यक्त्वेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सुमंगल वीर्य जिन, पाए अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरण, पाने भव से पार।।34।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलवीर्येभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध मंगल प्रगट, कीन्हें आतम धर्म।
नश जावें मेरे सभी, घाति अघाति कर्म।।35।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम श्री सिद्ध हैं, जगती पति जगदीश।
आत्म सिद्धि के हेतु हम, चरण झुकाते शीश।।36।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तम नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम श्री सिद्ध हैं, तीन लोक के ईश।
आत्म सिद्धि के हेतु हम, चरण झुकाते शीश।।37।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम गुण प्राप्त हैं, सिद्ध अनन्तानन्त।
पूजा करते हम यहाँ, पाने भव का अन्त।।38।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाए हैं सिद्ध जिन, निज लोकोत्तम ज्ञान।
गुण पाने जिन सिद्ध के, करते यहाँ विधान।।39।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम दर्शन प्रभु, प्रगटाए जिन सिद्ध।
पावन परमेष्ठी बने, अनुपम जगत प्रसिद्ध।।40।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध वीर्यधारी हुए, लोकोत्तम शुभकार।
पूजा करते हम यहाँ, जिनपद बारम्बार।।41।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छंद)

लोकोत्तम शरणाय अतिशय सिद्ध कहाए, जिन गुण पाने हेतु प्राणी तुमको ध्याये।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ! चरणों शीश झुकाए।।42।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शरण को पाए सिद्धों में मिल जाए, निज स्वरूप को पाए भव से मुक्ति पाए।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ!चरणों शीश झुकाए।।43।।

ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सुदर्शन पाय तीनों लोक प्रकाशे, चरण-शरण में जाय सारे कर्म विनाशे।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ! चरणों शीश झुकाए।।44।।

ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध ज्ञान शरणाय होती अनुपम भाई, भव्यों ने त्रियकाल पाके मुक्ति पाई।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए,शिव पद दो हे नाथ! चरणों शीश झुकाए।।45।।
ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध वीर्य शरणाय पाते जो भी प्राणी, कर्म घातिया नाश बनते केवल ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए,शिव पद दो हे नाथ!चरणों शीश झुकाए।।46।।
ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परमात्म स्वरूप जिनवर सिद्ध कहाए, चरण शरण के भक्त क्षण में मुक्ति पाए।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए,शिव पद दो हे नाथ! चरणों शीश झुकाए।।47।।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमात्मस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धाखण्ड स्वरूप सिद्ध शिला के वासी, निज में रहते लीन केवलज्ञान प्रकाशी।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ! चरणों शीश झुकाए।।48।।
ॐ ह्रीं सिद्धाखण्डस्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अड़तालिस वान, सिद्ध प्रभु अविकार।
रहते निज में लीन जो, वंदन बारंबार।।

ॐ ह्रीं अष्ट चत्वारिंशद गुण संयुक्त सर्व सिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

दोहा– तीन लोक में पूज्य हैं, मंगल मयी त्रिकाल।
सिद्धों के गुण की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

हे शुद्ध सनातन अविकारी!, हे नित्य निरंजन मोक्ष धाम!।
हे महाधैर्य! हे अविनाशी!, तव चरणों में शत्–शत् प्रणाम।।
हे मोहजयी! हे कर्मजयी!, तुमने कषाय पर जय पाई।
मोहित करने को मोह कर्म ने, अपनी शक्ति अजमाई।।1।।

उदयागत कर्मों ने अपना, शक्तिशः जोर लगाया था।
पर नाथ आपकी समता के, आगे न जोर चल पाया था।।

कभी क्रोध ने जोर लगाया था, कभी मान उदय में आया था।
माया कषाय अरु लोभोदय, का भी न जोर चल पाया था।।2।।

मिथ्यात्व ने मति मिथ्या करने, हेतु भी जोर लगाया था।
क्षायिक सम्यक्त्व के आगे वह, क्षणभर भी न रह पाया था।।
ज्ञानावरणी जो कर्म रहा, आवरण ज्ञान पर डाल रहा।
अज्ञान महातम के कारण, जग में रहकर बहु कष्ट सहा।।3।।

कर्म दर्शनावरण उदय में, आ दर्शन गुण घात करे।
अन्तराय विघ्नों की भाई, जीवन में बरसात करे।।
वेदनीय सुख–दुःख का वेदन, करने में सहयोग करें।
राग–द्वेष निर्मित कर अपने, चेतन गुण को पूर्ण हरे।।4।।

गतियों में भटकाने वाला, आयु कर्म निराला है।
तीन लोक में जन्म–जरादि, के दुःख देने वाला है।।
नाम कर्म तन की रचना कर, नाना रूप बनाता है।
कर्म और नो कर्म वर्गणा, पर अधिकार जमाता है।।5।।

उच्च नीच कुल में ले जाने, वाला गोत्र कर्म गाया।
नाथ आपके आगे कर्मों, की न चल पाई माया।।
चिन्मूरत आप अनन्त गुणी, तुममें आनन्द समाया है।
सब ऋद्धि सिद्धियों ने झुककर, आश्रय तव पद में पाया है।।6।।

सूरज को देख गगन में ज्यों, कई फूल जमीं पर खिल जाते।
अपनी सुगन्ध सौरभ द्वारा, जन–जन के मन को महकाते।।
हे प्रभु! आपका दर्श विशद, जग जन में प्रेम जगाता है।
शुभ ध्यान आपका भव्यों को, सीधा शिवपुर पहुँचाता है।।7।।

दोहा– जिन सिद्धों की अर्चना, करते जो धर ध्यान।
अल्प समय में जीव वह, पाते पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहुमं अवगहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चित् चिन्मय चेतन प्रभु! चिदानन्द चिद्रूप।
तव चरणों का ध्यान कर, पाएँ निज स्वरूप।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

मध्य लोक के मध्य है, जम्बू द्वीप महान।
भरत क्षेत्र में श्रेष्ठतम, भारत देश प्रधान।।1।।
भरत क्षेत्र में श्रेष्ठ है, राजस्थान प्रदेश।
ज्ञानी ध्यानी धर्म प्रिय, रहते लोग विशेष।।2।।
जिला भीलवाड़ा रहा, जिसमें शुभ स्थान।
है बिजौलिया श्रेष्ठतम, तीरथ क्षेत्र महान।।3।।
नगर बीच मंदिर बड़ा, जिसमें पारसनाथ।
उनके चरणों में विशद, झुका रहे हम माथ।।4।।
सिद्धचक्र का श्रेष्ठतम, जग में रहा विधान।
जिसके द्वारा सिद्ध का, किया शुभम गुणगान।।5।।
विक्रम संवत् बीस सौ, सड़सठ रहा महान।
पच्चीस सौ सैंतिस शुभ, कहा वीर निर्वाण।।6।।
पौष कृष्ण द्वितीया तिथि, प्रातः दिन गुरुवार।
रचना पूरी यह हुई, पावन अपरम्पार।।7।।
ज्ञानमति जी आर्यिका, संत लाल विद्वान।
स्वस्ति भूषण आर्यिका, के हैं पूर्व विधान।।8।।
उन रचनाओं का विशद, लिया गया आधार।
शुभ भावों का यह मिला, हमको शुभ उपहार।।9।।
लोक अनादि काल है, शब्द अनादि अनन्त।
शब्द भाव के योग से, बने जीव धीमंत।।10।।
लघु धी से लघु शब्द में, किया विशद गुणगान।
विद्वत ज्ञानी भूल को, यहाँ सुधारें आन।।11।।

सिद्धचक्र विधान की आरती

सिद्धचक्र की करते हैं हम, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए हैं हम, सिद्धों के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।।टेक।।
ज्ञान दर्शनावरण वेदनीय, मोहनीय भी गाए।
आयु नाम अरु गोत्र अंतराय, आठों कर्म नशाए।।
हो जिनवर .....।।1।।
काल अनादि अनंत बताया, लोक अनादी गाया।
जीव अनादी रहे लोक में, परावर्त जो पाया।।
हो जिनवर .....।।2।।
अंत नहीं है कहीं लोक का, ना जीवों का भाई।
किंतु आपने आत्म साधना, करके मुक्ती पाई।।
हो जिनवर .....।।3।।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, गुण अनंत के धारी।
नित्य निरंजन पूर्ण ज्ञानमय, वीतराग अविकारी।।
हो जिनवर .....।।4।।
काल अनादी से सिद्धों की, अर्चा होती आई।
अर्चा करके भवि जीवों ने, दुख से मुक्ती पाई।।
हो जिनवर .....।।5।।
श्रीपाल को कुष्ट हुआ तब, मैनासुंदरी रानी।
यंत्र सहित श्री जिनाभिषेक का, लेकर आई पानी।।
हो जिनवर .....।।6।।
सिद्धचक्र की अर्चा करके, गंधोदक छिड़काया।
श्रीपाल तब रोग मुक्त हो, पाए कंचन काया।।
हो जिनवर .....।।7।।
सिद्धों के गुण गाने वाले, सिद्धों के गुण पाते।
कर्म नाश कर अपने सारे, विशद सिद्धपुर जाते।।
हो जिनवर .....।।8।।
जागे हैं सौभाग्य हमारे, श्री जिन अर्चा पाई।
सिद्धचक्र का पाठ रचाया, हम सबने भी भाई।।
हो जिनवर .....।।9।।

सिद्धचक्र चालीसा

दोहा- रत्नत्रय से शोभते, पञ्च गुरू शिवधाम।
करते पूजा अर्चना, करके विशद प्रणाम।।
चालीसा जिन सिद्ध का, गाते हम शुभकार।
वन्दन करते भाव से, पद में बारम्बार।।

(चौपाई)

जय-जय परम सिद्ध शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।1।।
सिद्ध सनातन शुभ कहलाए, अपने सारे कर्म नशाए।।2।।
पुरुषाकार लोक है भाई, उस पर सिद्ध शिला बतलाई।।3।।
ईशत् प्राग्भार शुभ जानो, अष्टम पृथ्वी जिसको मानो।।4।।
ज्ञान शरीरी जो कहलाए, प्रभू निकल परमातम गाए।।5।।
ज्योति पुञ्ज अरूपी जानो, ज्ञानादर्श स्वरूपी मानो।।6।।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य कहाए, चमत्कार चित् चेतन पाए।।7।।
नित्य निरंजन गुण प्रगटाए, मुक्तिश्री के स्वामी गाए।।8।।
ज्ञानावरणी कर्म नशाए, ज्ञान अनन्त प्रभु प्रगटाए।।9।।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, दर्श अनन्त प्रभु परकाशे।।10।।
मोह कर्म को आप नशाया, गुण सम्यक्त्व श्रेष्ठ प्रगटाया।।11।।
अन्तराय नाशे जिन स्वामी, बल अनन्त पाये शिवगामी।।12।।
वेदनीय कर्मों के नाशी, अव्याबाध सुगुण की राशि।।13।।
आयु कर्म नशाने वाले, अवगाहन गुण पाने वाले।।14।।
नाम कर्म भी रह ना पाया, गुण सूक्ष्मत्व श्रेष्ठ प्रगटाया।।15।।
गोत्र कर्म के नाशी जानो, अगुरुलघु गुण जिनका मानो।।16।।
गुण सहस्र तुमने प्रगटाए, सहस्रनाम धारी कहलाए।।17।।
पार नहीं महिमा का पावे, चाहे बृहस्पति भी आ जावे।।18।।

इन्द्र नरेन्द्र सभी गुण गाते, फिर भी महिमा न कह पाते ।।19।।
भक्ति से हमने गुण गाया, पद में सादर शीश झुकाया ।।20।।
महा मोहतम नाशन हारी, निर्विकल्प आनन्दाविकारी ।।23।।
कर्म त्रिविध से रहित कहाए, निजानन्द सुखकारी गाये ।।24।।
संशयादि सारे भ्रमहारी, जन्म-जरादिक रोग निवारी ।।25।।
युगपद सकल लोक के ज्ञाता, अनुपम विधि के श्रेष्ठ विधाता ।।26।।
निरावरण निर्मल अनगारी, निरुपाधिक चेतन गुणधारी ।।27।।
दुर्निवार निर्द्वन्द स्वरूपी, निर आश्रय निरमय चिद्रूपी ।।28।।
सब विकल्प तज भेद स्वरूपी, निज अनुभूति मगन अनरूपी ।।29।।
अजर अमर अविकल अविनाशी, निराकार निज ज्ञान प्रकाशी ।।30।।
दोष अठारह रहित कहाए, ज्ञान शरीरी अविचल गाए ।।31।।
पावन वीतरागता धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।32।।
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय सब पाए, निज में सारे सुगुण समाए ।।33।।
गुण अनन्त के हैं जो स्वामी, आप कहाए अन्तर्यामी ।।34।।
सिद्ध सनातन तुम कहलाते, तीन लोक में पूजे जाते ।।35।।
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए ।।36।।
पञ्चम भाव आपने पाया, पञ्चम गति में धाम बनाया ।।37।।
श्री के धारी आप कहाए, हो कृतकृत्य सत्य शिव पाए ।।38।।
कहलाए प्रभु त्रिभुवन नामी, भव्य जीव हैं तव अनुगामी ।।39।।
चरण आपके 'विशद' नमामी, ज्ञानी जन करते प्रणमामी ।।40।।

दोहा- विघ्न हरण मंगल करण, सदा रहो जयवंत।
विघ्न रोग दुर्भाग्य का, होवे क्षण में अन्त ।।
चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ।
वसु कर्मों का नाशकर, बनें श्री का नाथ ।।

*****

सिद्धचक्र विधान–संस्कृत

स्तवन

जय सिद्धचक्र देवाधिदेव, सुरनर विद्याधर विहितसेव।
जय सिद्धचक्र भयचक्र मुक्त, मुक्तिश्री संगम शर्मशक्त।।1।।
जय सिद्धचक्र परमात्मरूप, पावन गुण रञ्जित परमभूत।
जय सिद्धचक्र कर्मारिवीर, दुस्तर भवसागर लब्धतीर।।2।।
जय सिद्धचक्र सम्यक्त्वसार, सञ्ज्ञान समुद्र समाप्त पार।
जय सिद्धचक्र दर्शन विशुद्ध, वीर्यार्जित गुणगण मणि समिद्ध।।3।।
जय सिद्धचक्र सूक्ष्म स्वभाव, अवगाहन गुण सम्यक्त्व भाव।
जय सिद्धचक्र गुरुलघु विमुक्त,अव्याधिबाध लक्षण निरक्त।।4।।
जय सिद्धचक्र दुर्गतिविनाश, दुर्व्याधिहरण जन पूरिताश।
जय सिद्धचक्र करुणा समुद्र, भुवनत्रय मण्डन नतमुनीन्द्र।।5।।
जय सिद्धचक्र लोकप्रसिद्ध , कालत्रय संभव भावशुद्ध।
जय सिद्धचक्र चारित्रसार, मुनिजन संसेवित मुक्तिहार।।6।।
जय सिद्धचक्र कविराज पूज्य, संप्राप्त शिवालय परमराज्य।
जय सिद्धचक्र हतदोष चक्र, तनुवात स्थित नुत नम्र शक्र ।।7।।
जय सिद्धचक्र चित्तौघहरण, जिननाम मात्र संपत्ति करण।
जय सिद्धचक्र निश्चल चरित्र, भवसागर तारणयानपात्र।।8।।

घत्ता छंद

इति सिद्ध समूहं, निर्गतमोहं, यः स्तोति विशुद्धमति।
समवति गुण चन्द्रः,परमजिनेन्द्रः सिद्ध सौख्य संपत्तिपति।।9।।

✻✻✻✻✻

श्री सिद्धचक्र पूजन संस्कृत

स्थापना बसंततिलका छंद

आनंद कंद जनकं परमात्म रूपं।
कर्माष्ट शोक भय रोग मद प्रशांतं।।
चंपा चमेलि कमलादि सुगंधि युक्तं।
संस्थायामि हृदये वर सिद्धचक्रं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठी समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

उपजाति छंद

सत्क्षीर सिंधु समं सुपावन, निर्मलं-रथ प्रासुकम्।
श्री सिद्ध जिनवर जगत्पूज्यं, जये भवजल तारकम्।।1।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धपरमेष्ठीने जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

कालेयकै-रथ चंदनै-रुंगरुद्वयेन समन्वितैः।
श्री सिद्ध जिनवर जगत्पूज्यं, जये भवजल तारकम्।।2।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्रीसिद्धपरमेष्ठीने संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शाल्यक्षतै शुभ्रैश्च पुञ्जैर्-वज्रकांतिधरैः शुभैः।
श्री सिद्ध जिनवर जगत्पूज्यं, जये भवजल तारकम्।।3।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धपरमेष्ठीने अक्षय पद प्राप्तेय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदारकुंद सुचंपकादिक, कृतक शोभन पुष्पकैः।
श्री सिद्ध जिनवर जगत्पूज्यं, जये भवजल तारकम्।।4।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धपरमेष्ठीने कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतभ्रष्ट चूर्णैर्-मिष्टमोदक, घेवरादि सुव्यञ्जनैः।
श्री सिद्ध जिनवर जगत्पूज्यं, जये भवजल तारकम्।।5।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धपरमेष्ठीने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नैश्च नानावर्ण मणिभिः, दीपकैः कर्पूरकैः।
श्री सिद्ध जिनवर जगत्पूज्यं, जये भवजल तारकम्।।6।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धपरमेष्ठीने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश घटक घटित दशांगधूपैः, सुरभिभिः सु मनोहरैः।
श्री सिद्ध जिनवर जगत्पूज्यं, जये भवजल तारकम्।।7।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्रीसिद्धपरमेष्ठीने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारंगि-पूग फलैश्च रम्भा, फलैः श्रीफल संगतैः।
श्री सिद्ध जिनवर जगत्पूज्यं, जये भवजल तारकम्।।8।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्रीसिद्धपरमेष्ठीने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिलितैर्-जलाद्यै-रष्टभिः, पुण्यार्घकैः कर युग्धृतैः।
श्री सिद्ध जिनवर जगत्पूज्यं, जये भवजल तारकम्।।9।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्रीसिद्धपरमेष्ठीने अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति वृद्धि शिवं श्रीदा, जिनेन्द्र गुण सागराः।
शांतिधारा त्रयं तेषां, ददामि दुःख शांतये।।

शांतये शांतिधारा

पुष्पवृष्टिं यथादिविः, कृताजिन सभालये।
तथा पुष्पं चाये चाऽहं, करोम्यथार्थ सिद्धिये।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

अष्ट कर्मभ्यः ये मुक्ताः, अष्ट गुणै-लंकृता।
निकल परमात्मा ही, सिद्ध लोकाग्र वासिनः।।

चिदानंद-मानंद लीलानिवासं, अखंड स्वभावं जिनं सिद्धराशिम्।
विषादोज्झितं वीतरागं विचक्रं, सदातोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ।।1।।
विशुद्धोदयं प्राप्तसंसार पारं, सुसंविन्-निधानं परं निर्विकारं।
विमायं विकायं वितापं विचक्रं, सदातोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्।।2।।
विमुक्ताशया दिव्य विज्ञान नेत्रं, विमोहं समस्फार पीयूष गात्रम्।
अमेयप्रभावं विदर्पं विचक्रं,सदातोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्।।3।।
विविक्तिं कलं निष्कलंकं कविस्थं, सुसेव्यं विपाकं विशंकह्य पारम्।
विकालं विकायं विकामं विचक्रं, सदातोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्।।4।।

त्रिलोकातिशायि प्रभं विश्वरूपं, ग्रहं तेजसा वीतवर्णं विरूपम्।
सदादृङ्.मयं ध्येयरूपं विचक्रं,सदातोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्।।5।।
अगम्यं मुनीना–मपि सुप्रबोधं, कृताहंकृति क्रोध चिंता निरोधम्।
अपारं जरा मृत्यु मुक्तं विचक्रं, सदातोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्।।6।।
अनन्तं विरामं विकारादि मुक्तं, विमुक्ति स्फुरत्–कामिनी रंगरक्तम्।
निरीहापघातं विहीनं विचक्रं,सदातोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्।।7।।
प्रदुष्टाष्ट कर्मेन्धनेभ्यो हुताशं, सुसिद्धाष्टकं चिद्गुणं चिद्–विलासं।
उदासीन–मीशान–मीशं विचक्रं,सदातोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम् ।।8।।
अजं शाश्वतं निर्जरं देवदेवं, विलोभं कृतानेक भूपाल सेवम्।
वषट् वैकृतं वा विपाशं विचक्रं,सदातोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्।।9।।
प्रयान्ति क्षयं कर्म यद्–ध्यान योगात्, ममत्वं गतानां मुनीनां क्षणेन्।
प्रसिद्धं विशुद्धं तथानंद रूपं,सदातोष्टवीमि स्फुटं सिद्धचक्रम्।।10।।

मालिनी छंद

विगत मदन भेदं दोष संदोह रोधं, स्मरित विरसंपूर्ण शंकरं सारभूतं।
अजर–ममर वंद्यं पद्मनंद्यादि देवं, मुनि निवह निषेव्यं सिद्धचक्रं सुदेवं।।11।।

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शार्दूल विक्रीडित छंद

इत्थं सिद्धमुपास्य शर्मसहितं संसार बाधापहं।
नो द्रव्याशुभ भावकर्म रहितं, संपन्नपर्यापहम्।।
यो ध्यायेत्–फलमश्नुते शिवमयं सौमं सहित्त्वाऽशिवम्।
संभुक्ताखिल मण्डलेश विबुध–स्वामि स्थितं सर्वतः।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

*****

पंचाचार परायणाः सुमुनयाः रत्नत्रयाराधकाः।
द्वादश तप त्रय गुप्ति गोपन पराः दश धर्म संराधकाः।।
समता वंदन स्तुति प्रतिक्रमः स्वाध्याय ध्यानः पराः।
आचार्या त्रय लोक पूजित पदाः वंदे विशदसागरम्।।

ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलयः

अष्ट कर्म विनिर्मुक्ताः, अष्ट गुणै-रलंकृतः।
विशद परमात्मा हि, सिद्ध लोकाग्र वासिनः।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अनंतदर्शनं यस्य, दृगावरण हानितः।
अनंतदर्शनं चाये, नीराद्यैर्-वसु द्रव्यकैः।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण विच्छेदात्, ज्ञानं केवल संज्ञकम्।
जातं यस्य शिवं चाये, नीराद्यैर्-वसु द्रव्यकैः।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय समुच्छेदा-दव्याबाध गुणोत्तमम्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, सिद्धानां पदहेतवे।।3।।

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहकर्म समुच्छेदात् ,सत्सम्यक्त्व गुणं परम्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, सिद्धानां पदहेतवे।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्त्व गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आयुः कर्म समुच्छेदा-दवगाह गुणोत्तमम्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, सिद्धानां पदहेतवे।।5।।

ॐ ह्रीं अवगाहन गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म समुच्छेदात् ,सत्सूक्ष्मत्व गुणं गतः।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, सिद्धानां पदहेतवे।।6।।

ॐ ह्रीं अनन्तसूक्ष्मत्व गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म समुच्छेदा-दगुरुलघुत्वं परं।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, सिद्धानां पदहेतवे।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघु गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय समुच्छेदात् ,जातो योऽनन्तवीर्यकः।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, सिद्धानां पदहेतवे।।8।।

ॐ ह्रीं अतुलवीर्य गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि सुगंध सुतंदुल पुष्पकैः, प्रवर मोदक दीपक धूपकैः।
फल भरै परमात्म प्रकाशकं, प्रवयजे विशदः सिद्धेश्वरं।

ॐ ह्रीं अष्टगुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

शुक्लध्यान वलेनात्र, कृतं कर्म विदारणं।
परात्म पद मारूढं, वंदेऽहं परमेश्वरं।।

द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

शुद्धं च दर्शनं यस्य, सप्त प्रकृति संक्षयात्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्ज्ञानं च यस्यास्ति, मोह संशय विच्युतम्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् चारित्रकम् यस्य, स्वात्माचरणकम् च यत्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्तित्व धर्म सम्पन्नो, यः सदा विद्यमानकः।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।4।।

ॐ ह्रीं अस्तित्वधर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसन्ति च गुणा यस्मिन्, द्रव्याश्रय तया धुव्रम्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।5।।

ॐ ह्रीं वस्तुत्वधर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न प्रमेयः प्रमाणेन, क्वश्चित् काले च संततम्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।6।।

ॐ ह्रीं अप्रमेयत्वधर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्रकर्म क्षयापन्नो, योऽगुर्वादि-लघुत्वकः।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वधर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतनत्वेन संपन्नो, यश्चैतन्यमयो महान्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।8।।

ॐ ह्रीं चेतनत्वधर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न मूर्तिर्-विद्यते यस्य, वसुकर्म क्षयात् धुव्रम्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।9।।

ॐ ह्रीं अमूर्तत्वधर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्वेन च संपन्नो, यो मिथ्यात्व निवारकः।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।10।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वधर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानत्वेन च संपन्नो, यो मोह क्षय कारकः।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।11।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव धर्मेण संपन्नस्-त्रैकाल्ये जीवनाच्चयः।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।12।।

ॐ ह्रीं जीवत्वधर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्मत्वेन च संपन्नो, यो नामक्षय कारणात्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।13।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वधर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्य संवेदनं ज्ञानं, विद्यते यस्य संततम्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।14।।

ॐ ह्रीं स्वसंवेदन ज्ञान धर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व स्वरूपं च यो नूनं, ध्यायत्येव निरंतरम्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।15।।

ॐ ह्रीं स्वरूपताप ध्यान धर्म संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुष्टयेन च संपन्नो, ज्ञानादीनां च यो ध्रुवम्।
सिद्धं चाये जलाद्यैस्-तं, कर्मणां क्षय हेतवे।।16।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टय संपन्न श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपजाति छंद

जयन्तु सिद्धा परमं पवित्रं, शुद्धात्म रूपा प्रवरा अनूपा।
लोकोत्तमा मंगलदा शरण्यास्, त्रैलोक्य वन्द्या विशदः स सिद्धः।।

ॐ ह्रीं षोडशगुण संपन्न श्री सिद्धाय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

अष्ट कर्म विनिर्मुक्त-मष्ट सद्गुण भूषणम्।
जलाद्यैर्-वसुभिर्-द्रव्यैः, सिद्धचक्रं यजाम्यहं।।

तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आनंद धर्म संपन्नं, चिदानंदमयं वरम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।1।।

ॐ ह्रीं आनन्दधर्मात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानंदतायुक्तं, परमानंद धर्मकम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।2।।

ॐ ह्रीं परमानन्दधर्मात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागादिभाव दूरं च, परं साम्य स्वभावकम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।3।।

ॐ ह्रीं साम्यस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्यस्वरूप संपन्नं, समतादि गुणालयम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।4।।

ॐ ह्रीं साम्यस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंताहि गुणा यस्य, विद्यंते सततम् वरम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतगुण संपन्नं, स्वरूपं यस्य विद्यते।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।6।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तातीतं च धर्मं वै-विद्यते यस्य संततम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।7।।

ॐ ह्रीं अनन्तधर्मात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्तधर्म संपन्नं, स्वरूप यस्य विद्यते।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।8।।

ॐ ह्रीं अनन्तधर्मस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शम स्वभाव सम्पन्नं, रागद्वेषादि दूरगम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।9।।

ॐ ह्रीं समस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागाद्यभाव संतुष्टं, शमतुष्टाभिधं वरम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।10।।

ॐ ह्रीं संतुष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागाद्यभावतो यस्य, संतोषो विद्यते-तराम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।11।।

ॐ ह्रीं समसंतोषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्यत्वेन युतं स्थानं, विद्यते यस्य संततम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।12।।

ॐ ह्रीं साम्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समत्वेन गुणा यस्य, विद्यते यस्य संततम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।13।।

ॐ ह्रीं साम्यस्थायिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्येन कृत-कृत्यस्-तु ,यः को वै विद्यते-तराम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।14।।

ॐ ह्रीं साम्यकृत्याकृत्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्य शरणं यस्य, मुक्तिस्थानात्-परं मतम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।15।।

ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यंते यस्य नान्येषु, गुणाह्यर्यादिषूत्तमाः।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।16।।

ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न चान्येषु प्रभा यस्य, विद्यते चाशुभादिषु।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।17।।

ॐ ह्रीं अनन्यधर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रमाणं चैव संज्ञानं, तेन मुक्तोयको मतः।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।18।।

ॐ ह्रीं परिणामविमुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मज्ञान गुणो यस्य, वर्तते चैव संततम्।
ब्रह्मज्ञानं च चैतन्यं, विद्यते यस्य संततम्।।19।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मज्ञान गुणो यस्य, वर्तते चैव संततम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।20।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मज्ञानं च चैतन्य,विद्यते यस्य संततम्।।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।21।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचेतनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारिणामिक भावश्च, शुद्धो वै यस्य संततम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।22।।

ॐ ह्रीं पारिणामिक श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धस्वभाव संपन्नं, शुद्ध स्वभाव नायकम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।23।।

ॐ ह्रीं शुद्धस्ववाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुद्धिर्-विद्यते यस्य, न शुद्धस्य कदाचन।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।24।।

ॐ ह्रीं अशुद्धि रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध्यशुद्धी न विद्यते, यस्य चिन्मय रूपिणः।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।25।।

ॐ ह्रीं शुद्ध्यशुद्धि रहित श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतदर्शनं यस्य, विद्यते च निरंतरम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।26।।

ॐ ह्रीं अनंतदृक श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतदर्शनं यस्य, स्वरूपं विद्यते तराम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।27।।

ॐ ह्रीं अनंतदृगानन्दवभाव श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्यानंत दृगानंद, स्वभावो विद्यतेतराम्।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।28।।

ॐ ह्रीं अनंतदृगुत्पाद श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतो यो ध्रुवः ख्यातो, नश्वरो न कदाचन।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।29।।

ॐ ह्रीं अनंतध्रुव श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतोऽव्यय भावो वै, विद्यते यस्य संततम्।
जलचंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।30।।

ॐ ह्रीं अनंताव्ययभाव श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतो निलयो यस्य, विद्यते च गृहं सदा।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।31।।

ॐ ह्रीं अनंतनिलय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतकं चामृतं नैव, समादत्तो कदाचन।
जल चंदन पुष्पाद्यैः, सिद्धंचाये जलादिकैः।।32।।

ॐ ह्रीं अनंतकराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री परमेश्वरे भक्तिः, सदा में स्याद् भवे-भवे।
भो सिद्धेश्वर! स्वामिन्, नमो नमो स्वनंतशः।।

ॐ ह्रीं द्वित्रिंशत् गुण संयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

ज्ञानाम्बर धरः सिद्धं, वर्णाहितं गुणाष्टकम्।
प्रणष्ट कर्माय स्मरेत्, सर्व कर्म प्रणाशये।।

चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अचलं वै पदं प्राप्ता, ये सिद्धा अचलात्मकाः।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धं चाये निरंजनम्।।1।।

ॐ ह्रीं अचल पद सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये जलेन गताः सिद्धिं, हतरागादि विद्-विषः।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।2।।

ॐ ह्रीं जलसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पाथसि गताः सिद्धिं, शुक्लध्यान बलेन वै।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।3।।

ॐ ह्रीं स्थलसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगने तु गताः सिद्धिं, शुक्ल ध्यान बलेन वै।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।4।।

ॐ ह्रीं गगनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुद्घातेन ये सिद्धिं, ये प्राप्ताश्चैव निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।5।।

ॐ ह्रीं समुद्घातसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुद्घात विना सिद्धिं, ये प्राप्ताश्चैव निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।6।।

ॐ ह्रीं असमुद्घातसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये च साधारणी भूय, नरत्वं प्राप्य सिद्धिगाः।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।7।।

ॐ ह्रीं साधारणसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये प्रत्येकत्व-मासाद्य, नरत्वं प्राप्य सिद्धिगाः।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।8।।

ॐ ह्रीं असाधारणसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकरत्व-मासाद्य, सिद्धिं प्राप्ताश्च ये ध्रुवम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकरेतरा ये च, सिद्धिं प्राप्ता निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।10।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरेतर सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्टश्चावगाहो वै, येषां संविद्यतेतराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।11।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टावगाहन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवगाहोमध्यमो येषां, विद्यते च निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।12।।

ॐ ह्रीं मध्यमावगाहन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जघन्यश्-चावगाहो हि, येषां वै विद्यतेतराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।13।।

ॐ ह्रीं जघन्यावगाहन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यग्लोके गता सिद्धिं, ये कर्मारि विनाशकाः।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।14।।

ॐ ह्रीं तिर्यक्लोक सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काले च षड् विधेसिद्धिं, ये याता वै निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।15।।

ॐ ह्रीं षड्विधिकाल सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महान्त-मुपसर्गं ये, षोढ्वा सिद्धिं गता ध्रुवम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।16।।

ॐ ह्रीं उपसर्ग सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्गेण ये सिद्धिं, विना प्राप्ता निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।17।।

ॐ ह्रीं निरुपसर्ग सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीपेषु ये गताः सिद्धिं, याता वै निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।18।।

ॐ ह्रीं द्वीप सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदधि चैव ये सिद्धिं, याता वै निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।19।।

ॐ ह्रीं उदधि सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थित्यासनेन ये सिद्धिं, प्रयाता वै निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।20।।

ॐ ह्रीं स्थित्यासन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्यंकासनतः सिद्धिं, ये जग्मु वै निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।21।।

ॐ ह्रीं पर्यंकासन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये तु पुंवेदतः सिद्धिं, प्रयाता वै निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।22।।

ॐ ह्रीं पुंवेद सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये च स्त्रीवेदतः सिद्धिं, प्रयाता वै निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।23।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये क्लीब वेदतः सिद्धिं, प्रयाता वै निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।24।।

ॐ ह्रीं क्लीबवेद सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षपक श्रेणि-मारूह्य, गता सिद्धिं च ये ध्रुवमं।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।25।।

ॐ ह्रीं क्षपक श्रेणी सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन समयेनैव, ये च सिद्धिं गता ध्रुवम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।26।।

ॐ ह्रीं एक समय सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये च सिद्धाश्च सेत्सयंति, ये च सिद्धांति संततम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।27।।

ॐ ह्रीं त्रिकाल सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिषु लोकेषु ये सिद्धाः, पूजनीया निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।28।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं वै मंगलं येषां, विद्यते च निरंतरम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।29।।

ॐ ह्रीं सिद्ध मंगल सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं वै मंगलं येषां, स्वरूपं विद्यते तराम।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।30।।

ॐ ह्रीं सिद्ध मंगल स्वरूप सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं च मंगलं येषां, ज्ञानं वै विद्यतेतराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।31।।

ॐ ह्रीं सिद्ध मंगल ज्ञान सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं हि मंगलं येषां, सम्यक्त्वं विद्यते तराम।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।32।।

ॐ ह्रीं सिद्ध मंगल दर्शन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं च मंगलं वीर्यं, येषां वै विद्यते तराम।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।33।।

ॐ ह्रीं सिद्ध मंगल वीर्य सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं च मंगलं येषां, सम्यक्त्वं विद्यतेतराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।34।।

ॐ ह्रीं सिद्ध मंगल ज्ञान सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं च मंगलं धर्मो, येषां वै विद्यते तराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।35।।

ॐ ह्रीं सिद्ध मंगल धर्म सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धोलोकोत्तमो यस्तु, विद्यते भुवनत्रये।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।36।।

ॐ ह्रीं सिद्ध लोकोत्तम सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं लोकोत्तमं यस्य, स्वरूपं विद्यते तराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।37।।

ॐ ह्रीं सिद्ध लोकोत्तम स्वरूप सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं लोकोत्तमं यस्य, गुणा वै संति संततम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।38।।

ॐ ह्रीं सिद्ध लोकोत्तम गुण सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं लोकोत्तमं यस्य, ज्ञानं वै विद्यते तराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।39।।

ॐ ह्रीं सिद्ध लोकोत्तम ज्ञान सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं लोकोत्तमं यस्य, दर्शनं विद्यते तराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।40।।

ॐ ह्रीं सिद्ध लोकोत्तम दर्शन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं लोकोत्तमं यस्य, वीर्य वै विद्यतेतराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।41।।

ॐ ह्रीं सिद्ध लोकोत्तम वीर्य सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध लोकोत्तमो यस्य, शरणं विद्यते तराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।42।।

ॐ ह्रीं सिद्ध लोकोत्तम शरण सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं स्वरूपकं यस्य, शरणं विद्यतेतराम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।43।।

ॐ ह्रीं सिद्ध स्वरूप शरण सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं च दर्शनं यस्य, शरणं विद्यते तराम।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।44।।

ॐ ह्रीं सिद्ध दर्शन शरण सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं ज्ञानं च शरणं, विद्यते यस्य संततम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।45।।

ॐ ह्रीं सिद्ध ज्ञान शरण सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धं वीर्यं च शरणं, विद्यते यस्य संततम्।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।46।।

ॐ ह्रीं सिद्ध वीर्य सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमात्म स्वरूपो यः, सिद्धोवैकर्म घातकः।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।47।।

ॐ ह्रीं सिद्ध परमात्म स्वरूप सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखंड च स्वरूपंवै, सिद्धं यस्य च संततम्।।
नीर गंध प्रसूनाद्यैः, सिद्धंचाये निरंजनम्।।48।।

ॐ ह्रीं सिद्धाखंड स्वरूप सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

इत्यार्चिताः श्री जिनचन्द्र मुख्या, नव प्रभेदार्चित देव सिद्ध।
एता महार्घेण समर्चिता नः, सिद्धि श्रियं शुद्ध सुखं दिशन्तु।

ॐ ह्रीं अनतानंत सिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं अ से आ उ सा नमः।

जयमाला

मालनी छंद

त्रिभुवन पति पूज्यं पुण्य–पाप–प्रमुक्तं,
विगत–कलुष भावं छिन्न–संसार–भावं।।
जगति पति–सुसेव्यं संभजे भक्ति पूर्वं,
वरशिव–सुगणं–तं लोक मूद्धविभासं।।1।।

अपारज–वंजव–जीवन कर्म्म–मदेन विदारण–केशरि धर्म्म।
त्रिलोक–शिरोगत–पुण्य विमुक्त, महासुखमग्र–महोजय सिद्ध।।2।।
अखंडित चिन्मय सात करंड, क्षयोत्थ परोन्नत शक्ति सुपिंड।
समुद्र व भीति–विमुक्त समृद्ध, महासुखमग्र महोजय सिद्ध।।3।।
सुरासुर–मानुष–नाग–पराज, सुदूरित दुष्कृत भाव समाज।
सुकेवल बोध–सुदृष्टि समिद्ध, महासुख–मग्र महोजय सिद्ध।।4।।
दिवाकर चन्द्र विशिष्ट विकास, महीधर–भूषित–सहज–निराश।
समाकुल–कुंद कुबार विक्रुद्ध, महासुखमग्र महोजय सिद्ध।।5।।
जिनाधिप मान निरूपित भाव, सुसूक्ष्म गणेश निरूप विराव।
विबाध विकस्वर दूर विरुद्ध,महासुखमग्र महोजय सिद्ध।।6।।
तपोभर भूषित निर्मल–योग, समाप्त–विबोध विशोक विराग।
दुःखद दवानल–मेघ–विनद्ध,महासुखमग्र महोजय सिद्ध।।7।।
चिरंतन काल कलाकृत वास, भवाब्धि विशोषक शुद्ध समास।
मनोज–हृषीक समाप्त विशुद्ध,महासुखमग्र महोजय सिद्ध।।8।।
अनादि–निरंत–पदस्थित–रूप,रसादि विमुक्त विविक्त विधूप।
जरादि दशा–दलनार्थ–वियुद्ध, महासुखमग्र महोजय सिद्ध।।9।।
महेश सुशंकर निर्जर शक्र, मुनीन्द्र सुचन्द्र सुभास्कर चक्र।
पराच्युत संभव शीतल बुद्ध, महासुखमग्र महोजय सिद्ध।।10।।

मालिनी वृत्त छंद

समय रस समग्रं पूर्ण–भावं विभावं।
जनित–शिव–सुसारं यः स्मरेत्–सिद्धचक्रं।।
अखिल–नर–सुपूज्यं शौभचन्द्रादि–सेव्यं।
भजति शिव–सुसीतं संविभुज्याखिलार्थं।।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत सिद्धेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गुणाधिपं सारं,सर्व सौख्य करं परं।
सिद्ध गुणावलीं कुर्यात्, 'विशदं' शाश्वति श्रियम्।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री सिद्धचक्र विधान की आरती

तर्ज- इह विधि मंगल....

जिन सिद्धों की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।।टेक।।
ज्ञानावरणी कर्म नशाए, केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए।।1।।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, प्रभू दर्श गुण स्वयं प्रकाशे।।2।।
प्रभु जी मोह कर्म के नाशी ,गुण सम्यक्त्व सुगुण के वासी।।3।।
अंतराय प्रभु कर्म नशाए, वीर्यानंत स्वयं प्रगटाए।।4।।
वेदनीय प्रभु कर्म विनाशी, अव्याबाध सुगुण की राशी।।5।।
प्रभुजी आयु कर्म के नाशी, अवगाहन गुण धर शिव वासी।।6।।
नाम कर्म प्रभु जी विनशाए, गुण सूक्ष्मत्व स्वयं प्रगटाए।।7।।
गोत्र कर्म नशे जिन स्वामी, अगुरुलघु सुगुण धर नामी।।8।।
अष्टकर्म प्रभु जी विनशाए, विशद अष्ट गुण प्रभु जी पाए।।9।।
सिद्ध अनंतानंत कहाए, गुणानंत के स्वामी गाए।।10।।
श्री जिन पद में शीश झुकाएँ, 'विशद' भाव से आरति गाएँ।।11।।

*****

अष्टाह्निका जाप मंत्र-

1. ॐ ह्रीं नंदीश्वर संज्ञाय नमः। 2. ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूति संज्ञाय नमः। 3. ॐ ह्रीं त्रिलोकसार संज्ञाय नमः। 4. ॐ ह्रीं चतुर्मुख संज्ञाय नमः। 5. ॐ ह्रीं पंचमहालक्षण संज्ञाय नमः। 6. ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान संज्ञाय नमः। 7. ॐ ह्रीं सिद्धचक्र संज्ञाय नमः। 8. ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य 108 विशदसागर जी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता ।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरु....1।।

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया ।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरु....2।।

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा ।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।गुरु...3।।

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे ।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। गुरु....4।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर